E - CONTENT

Subject : Economics
Class : B.A Part I (Paper II)
Topic : International Monetary Fund (IMF)
(अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष)

By :
EKATA KUMARI
Guest Faculty
(Assistant Professor)
Mahila College Sasaram, Rohtas
Email I'd :
kharalwajekata@gmail.com

Introduction: अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा-कोष एक ऐसी संस्था है, जो अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक सहयोग के आधार पर मुद्रा के मूल्य में स्थायित्व बनाए रखने का प्रयास करती है। प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात संसार के लगभग सभी देशों में आर्थिक स्थिरता की गंभीर एवं जटिल समस्या उत्पन्न हो गयी थी। 1929-30 की विश्व व्यापी मन्दी तथा 1932 ई. में अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्णमान के पतन ने इसमें और सहयोग दिया, इसके फलस्वरूप विभिन्न देशों के भुगतान सन्तुलन के असन्तुलन की समस्या उत्पन्न हो जाने के कारण विनिमय नियंत्रण, द्विपक्षीय व्यापार समझौता अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग व विश्वशान्ति के लिए घातक समस्याएँ उत्पन्न हो गई। अर्थव्यवस्था में काफी आर्थिक उतार-चढ़ाव हुए और इन सारी आर्थिक अस्थिरता के साथ-साथ विनिमय दर की स्थिरता भी समाप्त हो गयी, जिससे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, लेन-देन तथा पूंजी के आवागमन पर काफी बुरा प्रभाव पड़ा। द्वितीय विश्वयुद्ध होते ही कुछ बड़े देशों के बीच आपसी समझौते भी समाप्त हो गए। अतः द्वितीय विश्व युद्ध के अन्तिम समय में अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक सहयोग, विदेशी व्यापार का विस्तार, अन्तर्राष्ट्रीय ऋण के समुचित प्रवाह के उद्देश्य की पूर्ति के लिए अन्तर्राष्ट्रीय कोष और अन्तर्राष्ट्रीय समाशोधन संघ की स्थापना की गई। लेकिन इन दोनों संघों

की स्थापना के बाद भी अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक स्थिरता प्राप्त नहीं हुई और अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक सहयोग के अभाव में आर्थिक क्रियाएँ कुशलता पूर्वक संचालित नहीं हो पाई।

अतः इस समस्या के निराकरण के लिए जुलाई 1944 में ब्रेटन वुड्स नामक स्थान पर 44 राष्ट्रों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन आयोजित किया गया। इसे ब्रिटन वुड्स सम्मेलन भी कहा जाता है। इस सम्मेलन में दो अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक संगठनों की स्थापना की गई —

(a) अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष
(b) अन्तर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष की स्थापना 27 Dec. 1945 ई. में हुई तथा 1 March, 1947 ई. से अपना कार्य प्रारंभ किया। 1947 में इसके सदस्यों की संख्या 30 थी जो वर्तमान में बढ़कर 184 हो गयी है। इस प्रकार कोष की स्थापना अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम है। अर्थशास्त्रियों का विचार है कि अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष की स्थापना केन्द्रीय बैंक की धारणा पर आधारित है तथा यह केन्द्रीय बैंकों का बैंक है।

इस प्रकार, स्पष्ट होता है कि अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की भावना पर आधारित है। अतः यह मौद्रिक क्षेत्र में पूर्ण राष्ट्रीय सार्वभौमिकता एवं पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीयता के बीच एक समझौता है।

Objects of IMF :— कोष के उद्देश्य कोष

के चार्टर के अनुसार तीन प्रकार से बताए गए है —

(i) अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक सहयोग की उन्नति का
मुद्रा कोष का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य सदस्य देशों के बीच अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक सहयोग को बढ़ावा देना तथा अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक समस्याओं का सब राष्ट्रों के परामर्श एवं सहयोग से समाधान करना है।

(ii) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा —
कोष का उद्देश्य ऐसी सुविधाएँ प्रदान करना है जिससे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा मिले। इस कार्य के लिए मुद्राकोष द्विपक्षीय समझौते के स्थान पर भुगतान व व्यापार संबंधी बहुपक्षीय समझौते कराने की सुविधा देगा।

(iii) विनिमय दरों मे स्थिरता —
इस कोष का महत्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के विकास के लिए सदस्य राष्ट्रों के बीच विदेशी विनिमय प्रतिबन्धों तथा प्रतियोगी अवमूल्यन को रोकेगा।

(iv) अन्तर्राष्ट्रीय भुगतानों की विषमता को दूर करना —
अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा-कोष सदस्य राष्ट्रों के अदायगी शेषों मे होनेवाले असन्तुलन को दूर करने का प्रयास करेगा।

(v) अल्पकालीन मौद्रिक सहायता —
अन्तर्राष्ट्रीय भुगतान असन्तुलन को कम करने के लिए मुद्रा-कोष सदस्य देशों को अल्पकालीन सहायता भी देगा

(vii) उत्पादक पूंजी विनियोग — कोष का एक उद्देश्य यह भी है निश्चित किया गया है कि एक दूसरे देश को दीर्घकालीन पूंजी के लाभदायक अवसरों में योग दे।

(viii) विनिमय नियंत्रणों को हटाना — अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देने के लिए कोष सभी प्रकार के विनिमय नियंत्रणों को हतोत्साहित करता है।

(viii) सन्तुलित आर्थिक विकास में सहायक — IMF सदस्य राष्ट्रों विशेषकर पिछड़े हुए राष्ट्रों को सन्तुलित आर्थिक विकास में सहायता देता है और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सभी सदस्य राष्ट्रों में रोजगार का ऊँचा स्तर स्थापित करने में योगदान देता है।

इस प्रकार, उपर्युक्त विवेचनाओं से स्पष्ट है कि मुद्राकोष की स्थापना से इन विभिन्न उद्देश्यों के सहारे एक ऐसी सुदृढ़ व्यवस्था की नींव पड़ी जो अन्तर्राष्ट्रीय सहायता के माध्यम से पर्याप्त लचीलापन बनाए रखने के साथ-साथ मौद्रिक अनुशासन के उन सिद्धान्तों पर आधारित है, जिनके बिना कोई भी अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था समुचित तरीके से नहीं चल सकती है।

Functions of I.M.F. :— मुद्राकोष अपने इन विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अपना कार्य संचालन एक गवर्नर्स का बोर्ड, संचालक मंडल, प्रबन्ध संचालक तथा अन्य कर्मचारियों के

निम्नलिखित है —

(a) अल्पकालीन आर्थिक सहायता —

मुद्रा-कोष सदस्य राष्ट्रों को उनके भुगतान शेष के अस्थायी असन्तुलन की पूर्ति के लिए अल्पकालीन संकटकालीन ऋण उनके केन्द्रीय बैंकों के माध्यम से देता है। इसके लिए वह सदस्य देशों की विदेशी मुद्राएँ बेचकर तथा उधार देकर उन्हें सहायता प्रदान करता है। वर्तमान समय में मुद्राकोष किसी भी देश को उसके कोटे के 50% तक ऋण देता है तथा गम्भीर परिस्थितियों में इससे भी अधिक ऋण देता है। इनके ऋण देने की अवधि 3 से 5 वर्ष तक की होती है। इनको अदायगी शीघ्र करनी पड़ती है ताकि पूँजी एक जगह फँसी नहीं रहे। इसलिए मुद्राकोष को एक गतिशील कोष माना जाता है।

इसके अन्तर्गत आर्थिक संकट की अवस्था में, विनियोग सम्बन्धी मौसमी कठिनाई, चालू भुगतान के असन्तुलन को दूर करने के लिए ऋण दिया जाता है।

(b.) प्रत्येक सदस्य द्वारा विनिमय दर निर्धारित करना —

IMF के सदस्य राष्ट्रों को अपनी मुद्राओं का मूल्य स्वर्ण में अथवा अमेरिकी डॉलर में घोषित करना होता है, ऐसा होने पर विभिन्न देशों की विनिमय दरों की आपसी निर्धारण में कठिनाई नहीं होती।

(c.) विनिमय दर में परिवर्तन —

मुद्राकोष के प्रावधानों के अनुसार सदस्य राष्ट्रों को सम-मूल्यों में 10% की कमी अथवा वृद्धि करने का

अधिकार है। यदि साम मूल्यों में परिवर्तन 10 से 20 के मध्य में हो तो सदस्य राष्ट्रों को कोष की पूर्वानुमति आवश्यक है जो मुद्रा-कोष को सूचना प्राप्ति के 72 घण्टों के अन्दर प्राप्त करनी होगी। 20% से अधिक परिवर्तन की दशा में अनुमति तभी प्रदान की जाती है जबकि सम्बन्धित राष्ट्र के भुगतान संतुलन में संरचनात्मक असाम्य उत्पन्न हो गया है।

(d.) विदेशी मुद्रा का ऋण — सदस्य देश के भुगतान संतुलन में घाटा की स्थिति में मुद्राकोष उस देश को वह विदेशी मुद्रा जिसकी उसे आवश्यकता है, निश्चित विनिमय दर पर ऋण के रूप में देता है, ताकि वह देश अपनी विदेशी देनदारी का भुगतान कर सके। ऐसे ऋण केवल अल्पकाल के लिए ही दिए जाते हैं।

(e.) प्रशिक्षण सम्बन्धी सुविधा — IMF अपने सदस्य राष्ट्रों के केन्द्रीय बैंकों तथा सरकार के वित्त विभाग के पदाधिकारियों के लिए प्रशिक्षण की सुविधाएँ प्रदान करता है। मुद्राकोष इस कार्य को सन् 1951 से सम्पादित कर रहा है। इसके लिए 1964 में एक प्रशिक्षण शाला की भी स्थापना की गई है।

(f.) संकटकालीन सुविधाएँ — मुद्रा-कोष विदेशी विनिमय तथा विदेशी व्यापार सम्बन्धी सभी प्रतिबन्धों के विरुद्ध है परंतु संकटकाल में सद

अधिकार प्रदान किया है।

(g.) साधनों की तरलता —

मुद्राकोष साधनों की तरलता बनाए रखने के लिए सदस्य देश को स्वर्ण के बदले मुद्रा या कोटे से अधिक मुद्रा को स्वर्ण देकर खरीद सकते है। प्रत्येक देश को कोष के पास रखी अपनी मुद्रा का कुछ भाग स्वर्ण या प्रतिभूति देकर दोबारा खरीदना होगा।

(h.) मुद्राकोष का प्रकाशन —

मुद्राकोष विभिन्न प्रकार के विवरण प्रकाशित करता है। इनमें वार्षिक रिपोर्ट, विदेशी विनिमय नियंत्रण-सम्बन्धी वार्षिक रिपोर्ट, भुगतान संतुलन, वार्षिक व्यापार की दशा, वित्त एवं विकास तथा अन्तर्राष्ट्रीय वित्त समाचार सर्वेक्षण आदि है।

मुद्राकोष दुर्लभ मुद्रा की व्यवस्था करती है। दुर्लभ मुद्राओं में खासकर डॉलर है। इसके लिए कोष के विधान में अलग से व्यवस्था की गई है। ये सदस्य देशों के दुर्लभ मुद्रा उधार देती है। अन्तर्राष्ट्रीय तरलता को बढ़ाने के लिए 28 July, 1969 को IMF ने ने एक नई योजना प्रारम्भ की है जिसे विशेष प्राप्ति अधिकार (SDR) या कागजी सोना कहा जाता है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि मुद्रा-कोष की वर्तमान व्यवस्था डॉलर के स्थान पर SDR पर आधारित है। इससे अन्तर्राष्ट्रीय तरलता में काफी वृद्धि हुई है। परिणामस्वरूप IMF का कार्य

Criticisms of I.M.F :- यद्यपि कोष ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मौद्रिक व व्यापारिक सहयोग के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए हैं तथापि सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक दोनो ही दृष्टिकोण से इसकी काफी आलोचना की गई है। इनकी मुख्य आलोचनाएं निम्नलिखित हैं —

(i.) कोष का सीमित कार्यक्रम —

कोष की प्रथम आलोचना इसके कार्यक्षेत्र की सीमितता से सम्बन्धित है। कोष केवल चालू भुगतानो के लिए ही विदेशी मुद्रा की व्यवस्था करता है। वह युद्ध, ऋणो की अदायगी, आयात निर्यात तथा अवरु स्टर्लिंग से सम्बन्धित समस्याओं में सहायता नहीं करता।

(ii.) कोटा निर्धारण का वैज्ञानिक आधार नहीं —

IMF के विरुद्ध यह कहा जाता है कि इसने सदस्य देशों का कोटा निर्धारित करने में कोई ठोस व वैज्ञानिक आधार नहीं अपनाया है विदेशी व्यापार, व्यापार शेष या विदेशी विनिमय की आवश्यकता आदि किसी को भी आधार नही माना है।

(iii.) दुर्लभ मुद्रा की समस्या —

मुद्राकोष दुर्लभ मुद्राओं का समाधान करने में असफल रहा है। डॉलर आज भी उतना ही दुर्लभ है जितना कि मुद्राकोष के प्रारम्भ होने के समय था।

(iv.) विनिमय नियन्त्रणों को हटाने में असमर्थ —

मुद्राकोष का प्रमुख उद्देश्य विदेशी

व्यापार पर लगाए गए प्रतिबन्धों तथा विनिमय नियंत्रणों को हटाना था परन्तु दुर्भाग्यवश उसे इस उद्देश्य में सफलता नहीं मिली।

(v.) दीर्घकालीन ऋणों का अभाव —

मुद्राकोष अल्पकालीन ऋण की सुविधा प्रदान करता है, जबकि अधिकांश विकासशील देशों की आवश्यकता दीर्घकालीन ऋणों की है किन्तु अब कोष ने दीर्घकालीन सहायता देना आरम्भ कर दिया है।

(vi.) तरलता की समस्या —

यद्यपि मुद्राकोष ने SDR के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय तरलता बढ़ाने के लिए एक अच्छी शुरुआत की है, परन्तु यह विकासशील राष्ट्रों की आवश्यकताएँ पूरी करने में असमर्थ रहा है।

(vii.) विनिमय स्थिरता का अभाव —

मुद्रा-कोष विनिमय स्थिरता के मुख्य उद्देश्य को प्राप्त करने में असफल रहा है। सन् 1971 तक इसने स्थिर विनिमय दर निर्धारित करने में सफलता प्राप्त की थी परन्तु 1971 के पश्चात् विनिमय दर दुबारा परिवर्तनशील हो गयी। विनिमय दर की स्थिरता का अभाव कोष की सबसे बड़ी असफलता है।

(viii.) अविकसित देशों का कम प्रतिनिधित्व —

मुद्राकोष के 70% सदस्य अविकसित देश के हैं, परन्तु केवल 35% वोट देने का इन्हें अधिकार प्राप्त है। इससे स्पष्ट है कि IMF पर विकसित एवं धनी देशों का आधिपत्य है।